

हमारा संकल्प: गांव के समग्र विकास के लिए समर्पण

प्रस्तावना

हमारा देश गांवों से बना है — भारत की आत्मा गांवों में बसती है। बिहार की लगभग 90% जनसंख्या गाँवों में रहती है। गांव न केवल हमारी संस्कृति और परंपरा का केंद्र हैं, बल्कि ये हमारे देश की रीढ़ भी हैं। लेकिन आज गांवों से शिक्षित, जागरूक और बौद्धिक रूप से सक्षम युवाओं का लगातार पलायन हो रहा है। ये युवा शहरों की चकाचौंध और अवसरों की ओर खिंच जाते हैं, जबकि उनके गांव सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े रह जाते हैं।

यह स्थिति केवल गांवों के लिए नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए चिंता का विषय है। जब गांव के युवा शहरों में छोटे-मोटे कामों में लग जाते हैं, तब उनकी रचनात्मकता, उद्यमिता और ऊर्जा गांव के उत्थान के बजाय महानगरों की भीड़ में गुम हो जाती है।

अगर गांवों से सभी बौद्धिक रूप से सशक्त लोग पलायन कर जाएंगे, तो गांवों की देखभाल कौन करेगा? वहां के बच्चों, किसानों, महिलाओं, बुजुर्गों की प्रगति कौन सुनिश्चित करेगा?

इन्हीं प्रश्नों को आत्मसात करते हुए हमने यह निश्चय किया है कि हम अपने शरीर, मन और जीवन को गांव के पुनरुत्थान के कार्य में समर्पित करेंगे। हम न केवल शिक्षा बल्कि रोजगार, कृषि, संस्कृति और स्वाभिमान जगाने के लिए कार्य कर रहे हैं ताकि गांव आत्मनिर्भर और गौरवशाली बन सके।

हमारा उद्देश्य

हमारा उद्देश्य एक ऐसी *युवा पीढ़ी* का निर्माण करना है:

- जो आत्मनिर्भर हो
- आधुनिक समाज की जटिल चुनौतियों का समाधान निकाल सके
- भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रभक्ति से प्रेरित हो
- जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक दृष्टि से पूर्ण विकसित हो
- जो वैश्विक सोच के साथ स्थानीय जड़ों से जुड़ी रहे
- जो तकनीक का प्रयोग गांव की उन्नति के लिए करे

हम यह मानते हैं कि जब तक गांव नहीं उठेंगे, तब तक बिहार और भारत का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं है। जब गांव जागेंगे, तभी देश प्रगति करेगा।

हमारे कार्यक्षेत्र

1. शिक्षा

- गांव के बच्चों को कम लागत में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा देना
- प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाना (जैसे सिमुलतला, नवोदय, रामानुजन टैलेंट सर्च परीक्षा, JEE, NEET)
- बच्चों को संस्कारों, योग, और प्रकृति से जोड़ना
- क्लासरूम के तनावपूर्ण माहौल से अलग, प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा देना
- बच्चों की जिज्ञासा को पोषित करने के लिए विज्ञान, गणित और भाषा की प्रयोगात्मक कक्षाएं
- डिजिटल शिक्षा और कंप्यूटर साक्षरता को गांव तक पहुंचाना
- बच्चों को उनकी रुचियों और प्रतिभाओं के अनुसार करियर मार्गदर्शन देना

2. कृषि और जैविक खेती

- जैविक खेती और एग्रोफोरेस्ट्री को बढ़ावा देना
- किसानों को विषमुक्त उत्पादन की ओर मार्गदर्शन
- भूमि की उर्वरता और पर्यावरण की रक्षा
- किसानों की आमदनी में वृद्धि
- भागलपुर (पीरपैंती) में कार्यान्वयन का अनुभव
- परंपरागत ज्ञान और आधुनिक कृषि विज्ञान का समन्वय
- प्राकृतिक कीटनाशक और खाद के प्रयोग का प्रशिक्षण
- कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना जैसे - जैविक सब्जी बिक्री, मशरूम उत्पादन, एग्रोफॉरेस्ट्री आधारित फल-वृक्ष उत्पादन, बांस और अन्य बहुवर्षीय पौधों की खेती, औषधीय पौधों का व्यवसायिक उपयोग, ग्रामीण नर्सरी और वृक्षारोपण केंद्रों की स्थापना

3. उद्यमिता विकास

- गांवों में स्वरोजगार को बढ़ावा देना
- युवाओं को स्थानीय संसाधनों के आधार पर उद्यमी बनाना
- शहरों की झुगियों से बचाकर गांवों में सम्मानजनक जीवन देना
- कौशल विकास प्रशिक्षण (Skill Development Workshops)
- महिला स्वयं सहायता समूहों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना
- कुटीर उद्योगों और हस्तशिल्प के लिए बाजार तक पहुंच बनाना

4. गौशाला का विकास

- देशी गायों का संरक्षण व पालन
- स्वदेशी नस्लों के माध्यम से शुद्ध दूध का उत्पादन
- गोशाला निर्माण हेतु भूमि व संसाधनों की व्यवस्था
- जैविक खाद और पंचगव्य निर्माण में गायों की भूमिका
- गोपालन को आधुनिक व्यवस्थाओं से जोड़ना
- ग्राम स्तर पर गौशाला आधारित आत्मनिर्भर मॉडल विकसित करना
- ग्रामीण जीवन में गायों की पारंपरिक भूमिका को पुनर्जीवित करना

5. संस्कृति और चेतना

- योग दिवस, उत्सव, ग्राम भ्रमण, आदि कार्यक्रमों का आयोजन
- गांव की प्रतिभाओं को मंच देना
- ग्राम्य जीवन को गौरवमयी बनाना
- पारंपरिक संगीत, कला, और लोक विधाओं का संरक्षण
- ग्राम स्वराज और आत्मनिर्भर भारत की भावना को जागृत करना
- युवाओं को नेतृत्व और सेवा के लिए प्रेरित करना

आपका सहयोग

हर संवेदनशील नागरिक समाज के लिए कुछ करना चाहता है। हम गांवों की दुर्दशा से व्यथित हैं, और भारत के भविष्य को उज्ज्वल देखना चाहते हैं, तो आइए साथ मिलकर इस यज्ञ में आहुति दें। हम आपकी भागीदारी को आमंत्रित करते हैं—यह आंदोलन केवल हमारा नहीं, बल्कि हम सबका है।

हम सब अपना योगदान तीन रूपों में दे सकते हैं:

1. **तन** – स्वयंसेवक के रूप में समय और सेवा देकर
2. **मन** – सुझाव, अनुभव और मार्गदर्शन देकर
3. **धन** – आर्थिक सहयोग देकर, ताकि इन कार्यों को धरातल पर उतारा जा सके

“ऐसा छोटा योगदान, गांव की बड़ी मुस्कान बन सकता है।”

हम यह मानते हैं कि वास्तविक परिवर्तन केवल योजनाओं से नहीं, बल्कि एकजुट और अटूट संकल्प तथा सतत प्रयासों से सम्भव होता है।